B.A. (Hons) Part I
Philosophy - Paper I

Topic - महात्मा बुद्ध का तृतीय आर्य सत्य'

Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

द्वितीय आर्य सत्य में महात्मा बुद्ध ने दुःख के 12 कारण बतलाये है और यह भी कहा है कि यदि कारण का अन्त हो जाये तो कार्य का भी अंत हो जायेगा। वैसी अवस्था जिसमें दुःखो का हमेशा के लिए नाश हो जाता है उसे दुःख निरोध कहते है। बुद्ध ने दुःख निरोध को 'निर्वाण' कहा है। बौद्ध दर्शन मे मानव जीवन का उद्देश्य इसी निर्वाण की प्राप्ति करना है। बौद्ध दर्शन में निर्वाण प्राप्त करने के लिए मनुष्य को चार आर्य सत्यों का पालन करना पड़ता है। 'निर्वाण' के संबंध में बौद्ध दर्शन का कहना है कि 'निर्वाण' 'अनिर्वचनीय' होता है। भाषा के माध्यम से इसका वर्णन करना असंभव है यही कारण है, कि महात्मा बुद्ध से जब कभी 'निर्वाण' के बारे मे पूछा जाता था तो वे मौन हो जाते थे। बुद्ध के इस संबंध में मौन हो जाने पर बौद्ध दर्शन में दो विचार आये हैं। कुछ विद्वानों ने निर्वाण का शाब्दिक

Page No: ....
Date: ..../..../....

(2)

अर्थ बुझा हुआ बतलाया है उनके विचार को 'निषेधात्मक मत' कहते हैं। जिसप्रकार किसी दीपक के बुझ जाने पर प्रकाश का अंत हो जाता है उसीप्रकार 'निर्वाण' प्राप्ति के बाद सभी प्रकार के दुःख समाप्त हो जाता है। इसे विचारकों के अनुसार निर्वाण का अर्थ 'जीवन का अंत' माना गया है। परन्तु आलोचनात्मक दृष्टिकोण से यह मत उचित नहीं है क्योंकि महात्मा बुद्ध ने अपने जीवनकाल में ही निर्वाण की प्राप्ति की थी। कुछ बौद्ध दार्शनिकों ने 'निर्वाण' का अर्थ 'शीतलता' से लिया है। इन विचारको के अनुसार निर्वाण का अर्थ 'वासना एवं दुःख रूपी अग्नि का ~~बुझ~~ ठण्डा' होना है। यह आनन्द की स्थिति है। धम्मपद में निर्वाण को आनन्द, चरम सुख, पूर्णशान्ति, लोभ, घृणा एवं भ्रम से रहित अवस्था माना गया है। बौद्ध दर्शन के ~~ध~~ धर्मोपदेशक ~~राजा~~ ~~मिलिन्द~~ नागसेन ने यूनान के राजा मिलिन्द से निर्वाण के स्वरूप की

व्याख्या उपमाओं के रूप में देते हुए कहा है कि निर्वाण सागर की तरह गहरा, पर्वत की तरह ऊँचा और मधु की तरह मीठा होता है। बौद्ध दर्शन में कहा गया है कि जिसका अँधे व्यक्ति को रंग का ज्ञान कराना असंभव है ठीक उसी प्रकार जिसने निर्वाण प्राप्त नहीं किया है, उसे निर्वाण के संबंध में भाषा के माध्यम से बतलाना कठिन है। निर्वाण प्राप्त व्यक्ति जीवित रहते हुए भी निष्काम भाव से कर्म करता रहता है। निर्वाण प्राप्ति के बाद मनुष्य सभी प्रकार के दुःखों से हमेशा के लिए छुटकारा पा लेता है। निर्वाण प्राप्ति के बाद व्यक्ति का पुनर्जन्म भी नहीं होता है। व्यक्ति संसार के आवागमन चक्र से मुक्त हो जाता है। निर्वाण के द्वारा परम शान्ति की प्राप्ति होती है। सांसारिक वस्तुओं से जिस शान्ति की प्राप्ति होती है वह अस्थाई होती है लेकिन निर्वाण से प्राप्त शान्ति सदा के लिए आनन्ददायक होती है।